SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

SSI

HISTORY

Paper - 2

BY

SUJEET BAJPAI SIR

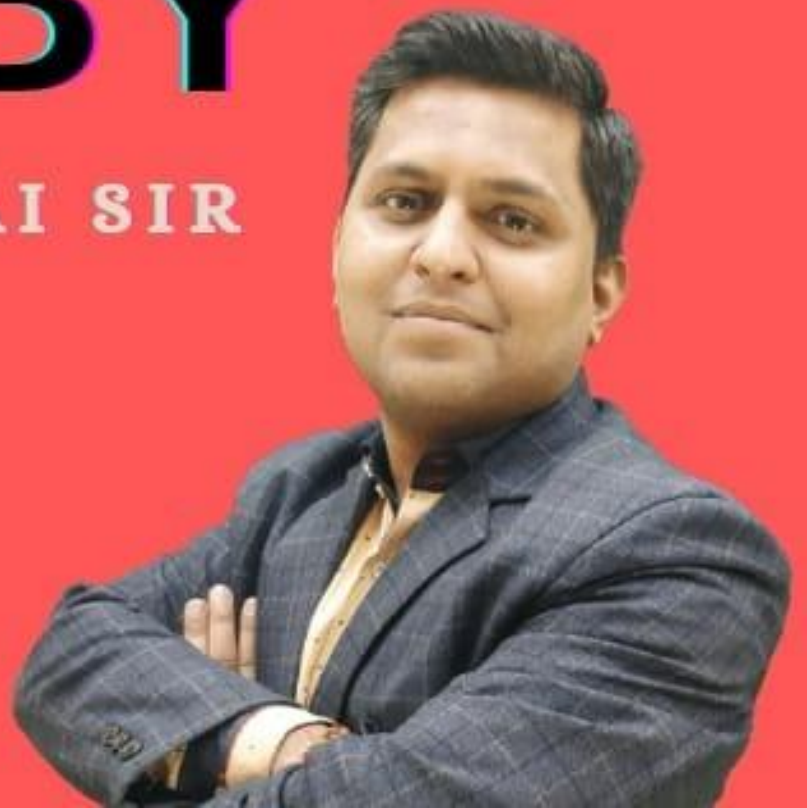

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

सिंधु सभ्यता (IVC)

- Harappa
- Lothal (GJ)
- Kalibanga (RT)
- Dholavira (GJ)

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

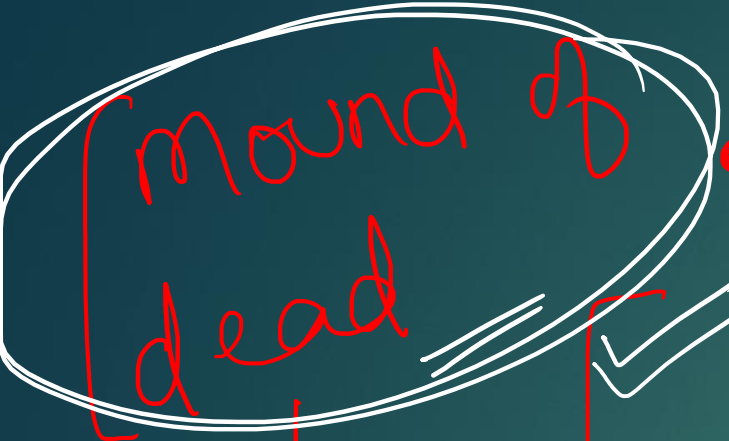

मोहनजोदड़ो
(Mohanjodaro)

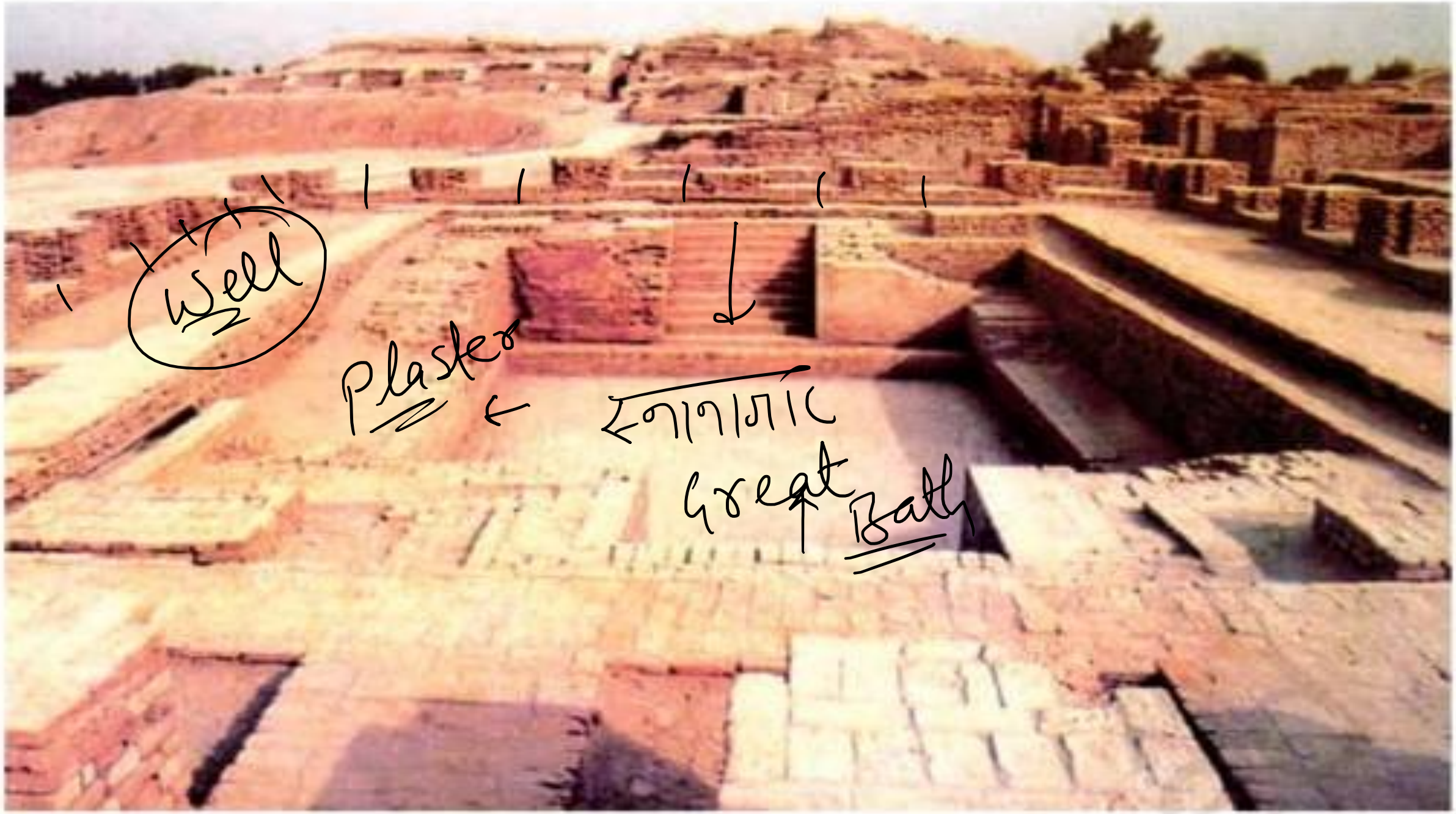
Well
Plaster
स्नानागार
Great Bath

Priest King: – पुरोहित राजा

Embroidered cloth. A stone statue of an important man found from Mohenjodaro shows him wearing an embroidered garment.

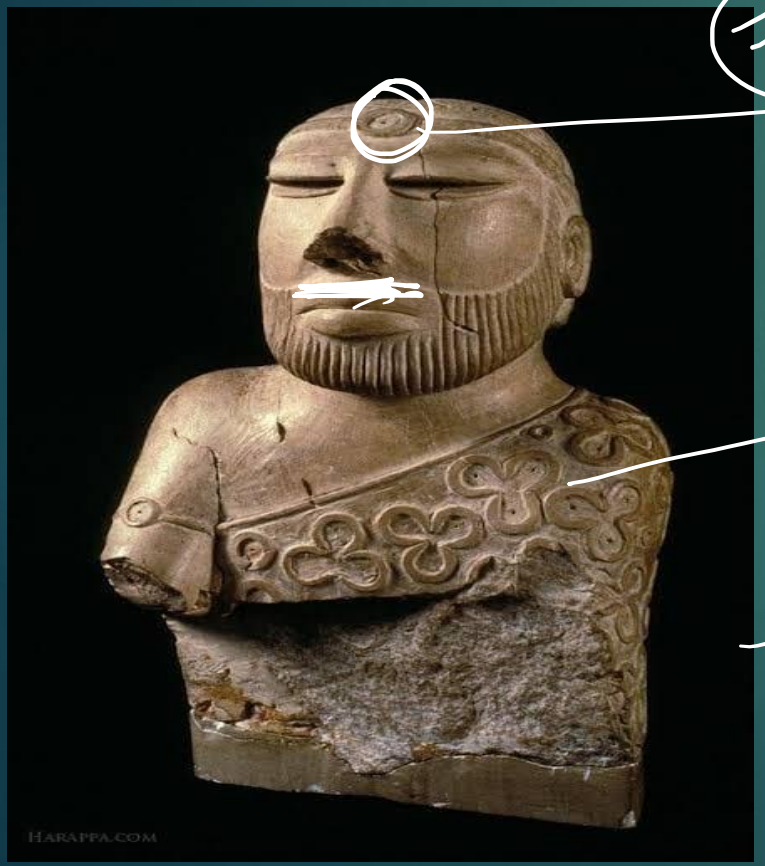

seal | मुहर

(कढ़ाई कपड़े)

MJ

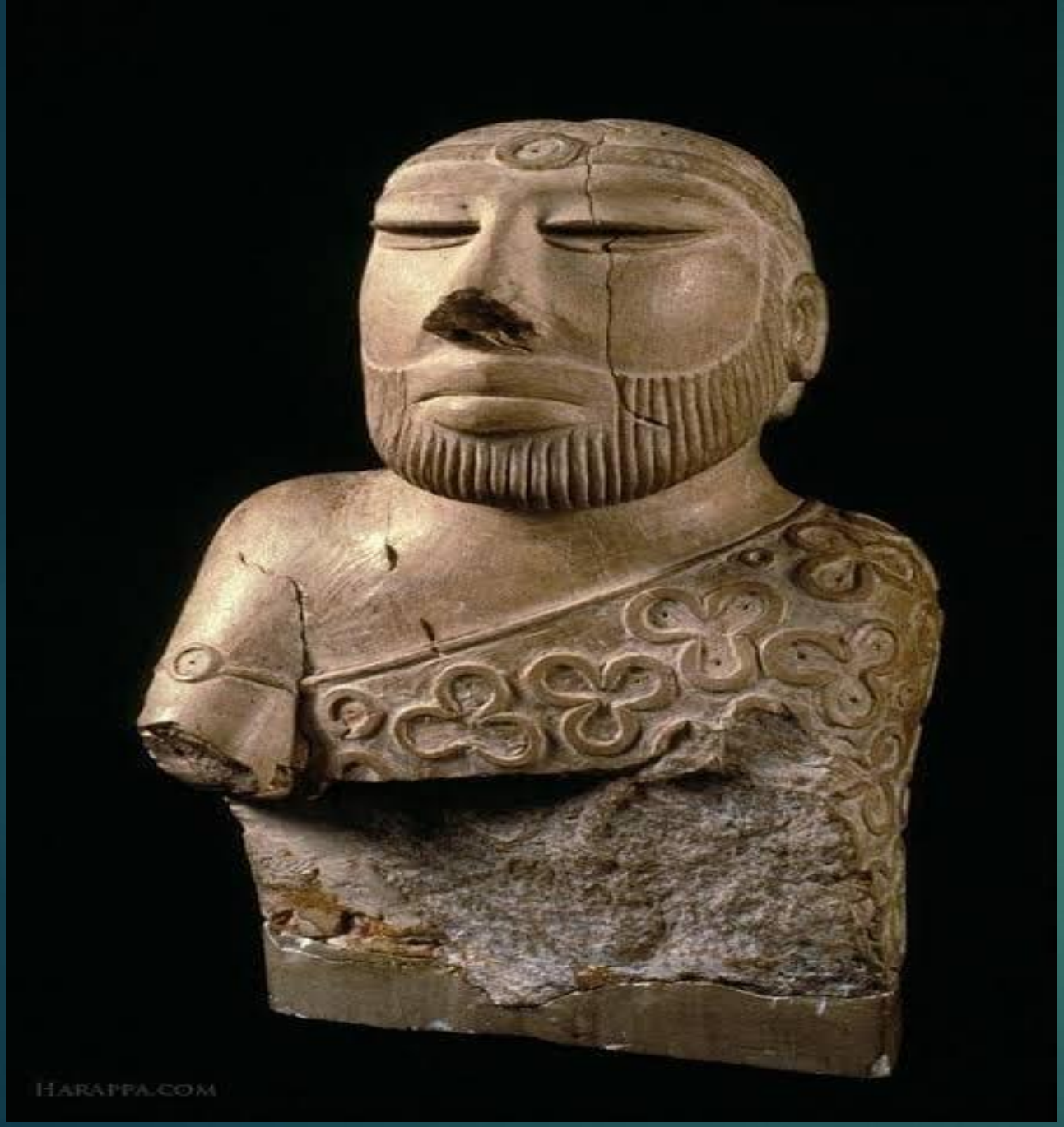

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

नर्तकी

→ Dancing girl

→ Bronze कांस्य

→ [Mohan Jo daro]

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

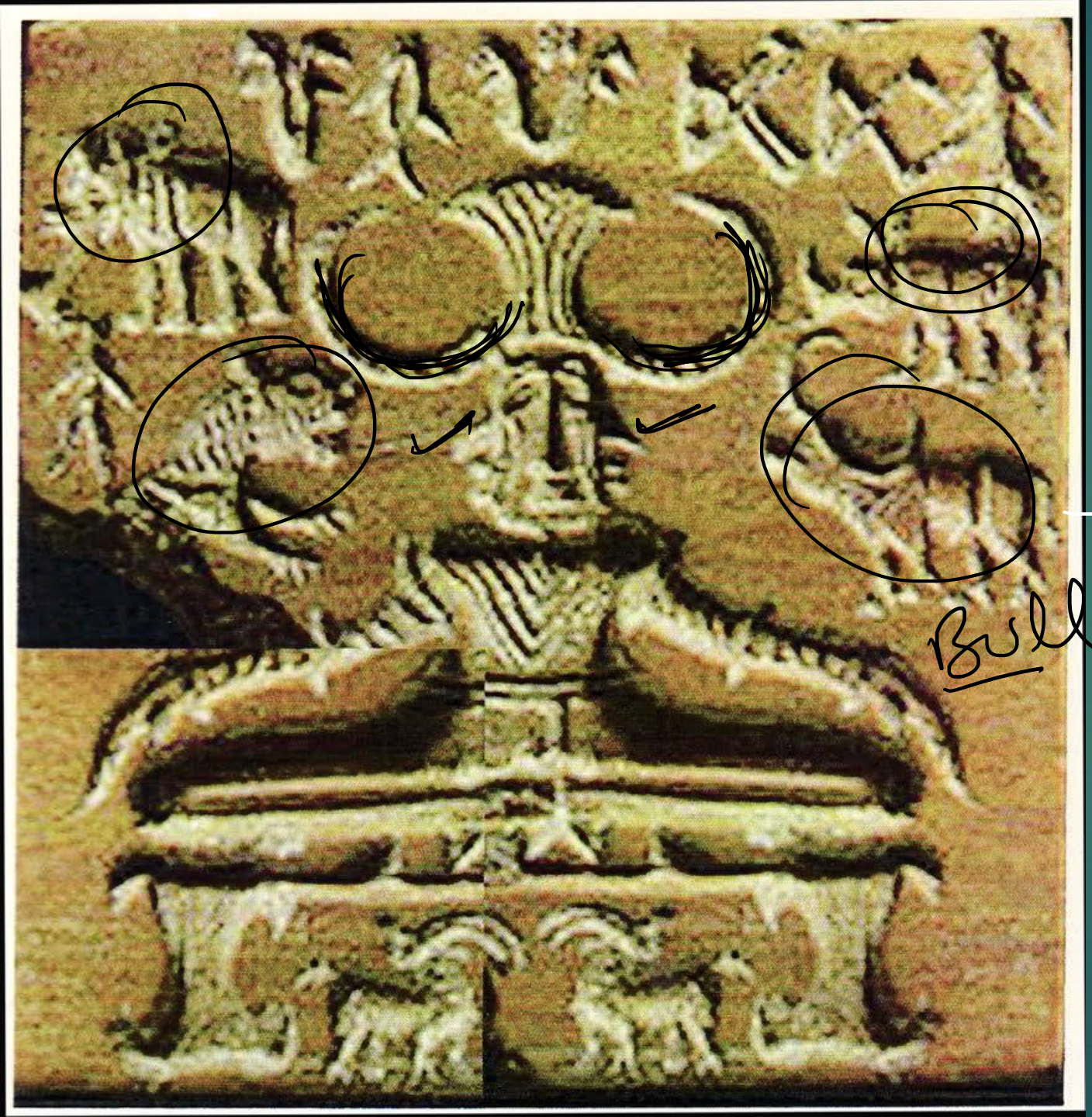

Pashupati → पशुपति

MJ

- Bull
- Rhino
- Ele
- Tiger

John Marshall called

Pashupati, Proto Shiva

আদি শিব

Other cities, such as Kalibangan and Lothal had fire altars, where sacrifices may have been performed. And some cities like Mohenjodaro, Harappa, and Lothal had elaborate store houses.

कालीबंगन और लोथल जैसे अन्य शहरों में अग्नि वेदियां थीं, जहां बलिदान किया गया हो सकता है। और मोहेंजोदरो, हड़प्पा और जैसे कुछ शहर लोथल में विस्तृत स्टोर हाउस थे।

अन्नागार - Grainaries

Note :

These cities were found in the Punjab and Sind in Pakistan, and in Gujarat, Rajasthan, Haryana and the Punjab in India.

Archaeologists have found a set of unique objects in almost all these cities: red pottery painted with designs in black, stone weights, seals, special beads, copper tools, and paralleled sided long stone blades.

नोट:

ये शहर पाकिस्तान के पंजाब और सिंध में और गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और भारत के पंजाब में पाए जाते थे। पुरातत्वविदों को लगभग इन सभी शहरों में अद्वितीय वस्तुओं का एक सेट मिला है: काले, पत्थर के वजन, जवानों, विशेष मोतियों, तांबे के औजारों और समानांतर तरफा लंबे पत्थर के ब्लेड में डिजाइन के साथ चित्रित लाल मिट्टी के बर्तन।

Generally, houses were either one or two storeys high, with rooms built around a courtyard. Most houses had a separate bathing area, and some had wells to supply water. Many of these cities had covered drains.

As the drains were covered, inspection holes were provided at intervals to clean them. All three — houses, drains and streets — were probably planned and built at the same time.

आम तौर पर, घर या तो एक या दो मंजिला ऊंचे थे, जिसमें आंगन के चारों ओर कमरे बनाए गए थे। ज्यादातर घरों में अलग से स्नान क्षेत्र था, और कुछ पानी की आपूर्ति के लिए कुओं था । इनमें से कई शहरों में नालों को कवर किया था। नालियों को ढके हुए थे, इसलिए उन्हें साफ करने के लिए अंतराल पर निरीक्षण छेद की व्यवस्था की गई थी। तीनों-घरों, नालियों और गलियों-शायद योजना बनाई गई थी और एक ही समय में बनाया गया।

Houses ⇒ [एक मंजिला या
दो मंजिला]

⇒ Drainage जल निकास ⇒
(Underground
भूमिगत

Expansion ⇒ विस्तार

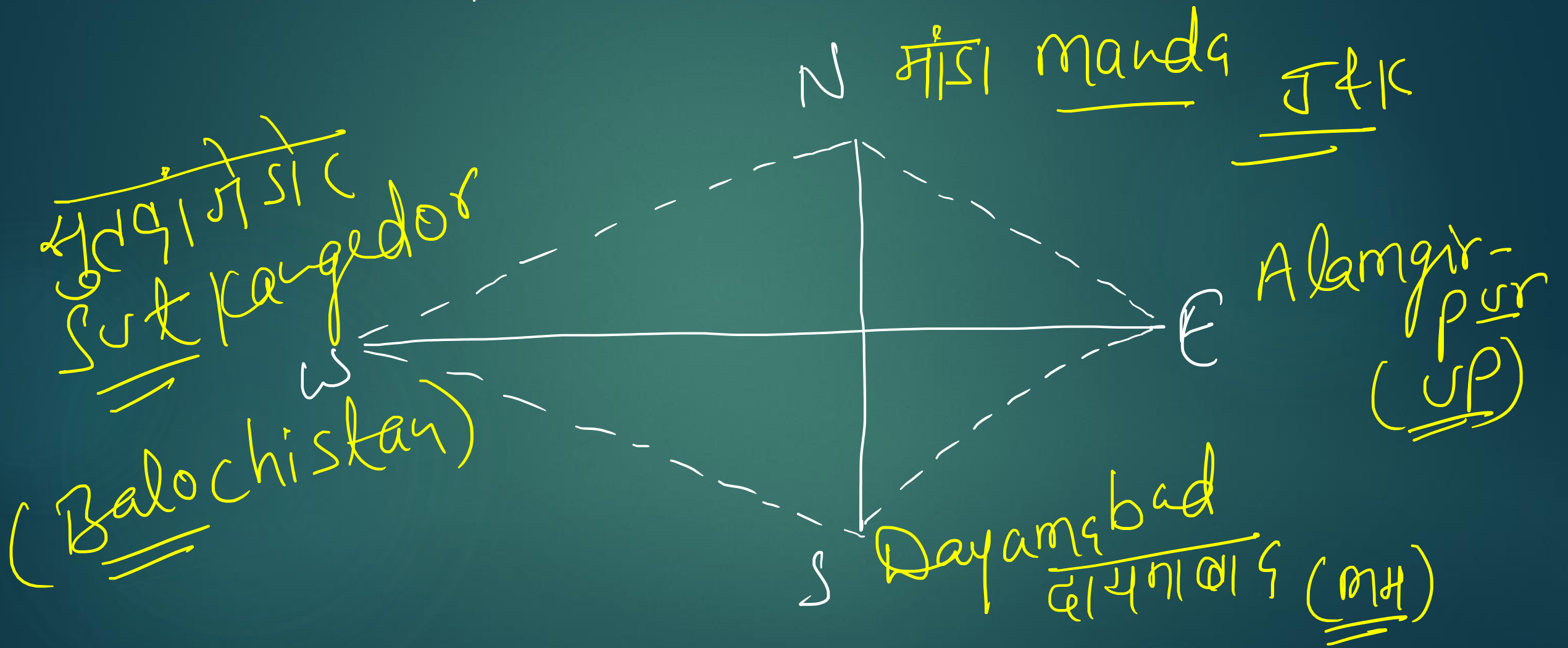

Life in the city

There were people who planned the construction of special buildings in the city. These were probably the rulers. It is likely that the rulers sent people to distant lands to get metal, precious stones, and other things that they wanted. They may have kept the most valuable objects, such as ornaments of gold and silver, or beautiful beads, for themselves.

शहर में जीवन शहर में विशेष भवनों के निर्माण की योजना बनाने वाले लोग भी थे। ये शायद शासक थे। यह संभावना है कि शासकों ने लोगों को धातु, कीमती पत्थर और अन्य चीजें प्राप्त करने के लिए दूर की भूमि पर भेजा जो वे चाहते थे। हो सकता है कि उन्होंने अपने लिए सोने-चांदी के गहने या खूबसूरत मोतियों जैसी सबसे मूल्यवान वस्तुएं रखी हों ।

Scribes → लिपिक

Scribes, people who knew how to write, who helped prepare the seals, and perhaps wrote on other materials that have not survived.

Besides, there were men and women, crafts persons, making all kinds of things — either in their own homes, or in special workshops.

A Harappan seal

The signs on the top of the seal are part of a script. This is the earliest form of writing known in the subcontinent. Scholars have tried to read these signs but we still do not know exactly what they mean.

एक हड़प्पा सील

सील के शीर्ष पर संकेत एक स्क्रिप्ट का हिस्सा हैं। यह उपमहाद्वीप में ज्ञात लेखन का सबसे पुराना रूप है। विद्वानों ने इन संकेतों को पढ़ने की कोशिश की है लेकिन हम अभी भी नहीं जानते कि वास्तव में उनका क्या मतलब है ।

व्यापार => Trade

Stone weights.

Notice how carefully and precisely these weights are shaped. These were made of chert, a kind of stone. These were probably used to weigh precious stones or metals.

पत्थर का बाँट :

ध्यान दें कि इन वजनों को कितनी सावधानी से और ठीक से आकार दिया जाता है। ये एक तरह के पत्थर के चेर्ट से बने होते थे। ये शायद कीमती पत्थरों या धातुओं का वजन करने के लिए इस्तेमाल किया गया ।

Beads

Many of these were made out of carnelian, a beautiful red stone. The stone was cut, shaped, polished and finally a hole was bored through the centre so that a string could be passed through it.

मनका

इनमें से कई कार्नेलियन, एक सुंदर लाल पत्थर से बने थे। पत्थर को काटा गया, आकार दिया गया, पॉलिश किया गया और अंत में केंद्र के माध्यम से एक छेद ऊब गया ताकि एक स्ट्रिंग इसके माध्यम से पारित किया जा सके।

Most of the things that have been found by archaeologists are made of stone, shell and metal, including copper, bronze, gold and silver.

Copper and bronze were used to make tools, weapons, ornaments and vessels. Gold and silver were used to make ornaments and vessels.

Perhaps the most striking finds are those of beads, weights, and blades.

पुरातत्वविदों को जो चीजें मिली हैं, उनमें से ज्यादातर पत्थर, खोल और धातु से बनी हैं, जिनमें तांबा, कांस्य, सोना और चांदी शामिल हैं। तांबे और कांसे का इस्तेमाल औजार, हथियार, गहने और बर्तन बनाने में किया जाता था। गहने और बर्तन बनाने में सोने-चांदी का इस्तेमाल किया जाता था। शायद सबसे हड़ताली पाता मोती, वजन, और ब्लेड के हैं ।

The Harappans seals:

These are generally rectangular and usually have an animal carved on them.

हड़प्पा सील:

ये आम तौर पर आयताकार होते हैं और आमतौर पर एक जानवर नक्काशीदार होते हैं उन पर।

Cotton was probably grown at Mehrgarh from about 7000 years ago. Actual pieces of cloth were found attached to the lid of a silver vase and some copper objects at Mohenjodaro. Archaeologists have also found spindle whorls,made of terracotta and faience. These were used to spin thread.

लगभग 7000 साल पहले से मेहरानगढ़ में कपास उगाई जाती थी। मोहेंजोदड़ो में चांदी के कलश और कुछ तांबे की वस्तुओं के ढक्कन से कपड़े के वास्तविक टुकड़े जुड़े पाए गए । पुरातत्वविदों को टेराकोटा और फैंस से बने धुरी भी मिले हैं । इनका इस्तेमाल थ्रेड को स्पिन करने के लिए किया जाता था।

[Sand बालू + रंग colour + Gum]

Faience

Unlike stone or shell, that are found naturally, faience is a material that is artificially produced. A gum was used to shape sand or powdered quartz into an object. The objects were then glazed, resulting in a shiny, glassy surface. The colours of the glaze were usually blue or sea green. Faience was used to make beads, bangles, earrings, and tiny vessels.

फ़ायन्स

पत्थर या खोल के विपरीत, जो स्वाभाविक रूप से पाए जाते हैं, फैंस एक ऐसी सामग्री है जो कृत्रिम रूप से उत्पादित होती है। एक गम का उपयोग रेत या पाउडर क्वार्ट्ज को किसी वस्तु में आकार देने के लिए किया जाता था। तब वस्तुओं को चमकता हुआ था, जिसके परिणामस्वरूप एक चमकदार, शीशे की सतह होती थी। शीशे के रंग आमतौर पर नीले या समुद्री हरे रंग के होते थे। फैन्स का इस्तेमाल मोतियों, चूड़ियां, झुमके और छोटे बर्तन बनाने के लिए किया जाता था ।

Raw materials that the Harappans used were available locally, many items such as copper, tin, gold, silver and precious stones had to be brought from distant places.

The Harappans probably got copper from present-day Rajasthan, and even from Oman in West Asia.

Tin, which was mixed with copper to produce bronze, may have been brought from present-day Afghanistan and Iran.

Gold could have come all the way from present-day Karnataka, and precious stones from present-day Gujarat, Iran and Afghanistan.

हड़प्पा वासियों ने जिन कच्चे माल का इस्तेमाल किया, वे स्थानीय स्तर पर उपलब्ध थे, तांबा, टिन, सोना, चांदी और कीमती पत्थरों जैसी कई वस्तुओं को दूर स्थानों से लाना पड़ता था। हड़प्पावासियों को शायद वर्तमान राजस्थान से और यहां तक कि पश्चिम एशिया के ओमान से भी तांबा मिला । टिन, जो कांस्य का उत्पादन करने के लिए तांबे के साथ मिलाया गया था, वर्तमान अफगानिस्तान और ईरान से लाया गया हो सकता है । वर्तमान कर्नाटक से सोना सभी तरह से आ सकता था, और वर्तमान गुजरात, ईरान और अफगानिस्तान से कीमती पत्थर ।

Harappans grew wheat, barley, pulses, peas, rice, sesame, linseed and mustard. A new tool, the plough, was used to dig the earth for turning the soil and planting seeds.

While real ploughs, which were probably made of wood, have not survived, toy models have been found.

As this region does not receive heavy rainfall, some form of irrigation may have been used. This means that water was stored and supplied to the fields when the plants were growing.

हड़प्पा गेहूं, जौ, दालें, मटर, चावल, तिल, अलसी और सरसों की वृद्धि हुई। एक नया उपकरण, हल, मिट्टी मोड़ और बीज रोपण के लिए पृथ्वी खुदाई करने के लिए इस्तेमाल किया गया था । जबकि असली हल, जो शायद लकड़ी से बने थे, बच नहीं पाए हैं, खिलौना मॉडल पाए गए हैं । चूंकि इस क्षेत्र में भारी वर्षा नहीं होती है, इसलिए हो सकता है कि किसी प्रकार की सिंचाई का उपयोग किया गया हो । इसका मतलब यह है कि जब पौधे उग रहे थे तो पानी का भंडारण कर खेतों में सप्लाई किया जाता था।

The Harappans reared cattle, sheep, goat and buffalo. Water and pastures were available around settlements. However, in the dry summer months large herds of animals were probably taken to greater distances in search of grass and water. They also collected fruits like ber, caught fish and hunted wild animals like the antelope.

हड़प्पाओं ने मवेशी, भेड़, बकरी और भैंस पाला। पानी और चरागाह थे बस्तियों के आसपास उपलब्ध है। हालांकि, शुष्क गर्मी के महीनों में जानवरों के बड़े झुंड शायद घास और पानी की तलाश में अधिक दूरी के लिए ले जाया गया । उन्होंने बेर जैसे फल भी एकत्र किए, मछली पकड़ी और मृग जैसे जंगली जानवरों का शिकार किया ।

Dholavira:

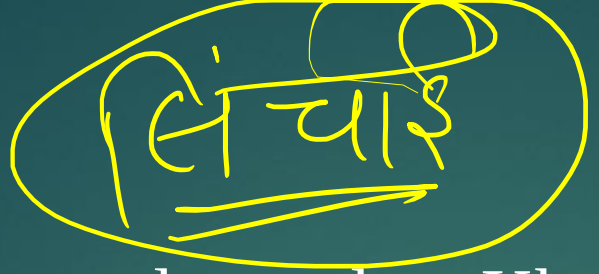

The city of Dholavira was located on Khadir Beyt (also spelled as Bet) in the Rann of Kutch, where there was fresh water and fertile soil.

Unlike some of the other Harappan cities, which were divided into two parts, Dholavira was divided into three parts, and each part was surrounded with massive stone walls, with entrances through gateways.

धोलावीरा:

धोलावीरा शहर कच्छ के रण में खदीर बेय (बेट के रूप में भी वर्तनी) पर स्थित था, जहां ताजा पानी और उपजाऊ मिट्टी थी। कुछ अन्य हड़प्पा शहरों के विपरीत, जिन्हें दो भागों में विभाजित किया गया था, धोलावीरा को तीन भागों में विभाजित किया गया था, और प्रत्येक भाग को बड़े पैमाने पर पत्थर की दीवारों से घिरा हुआ था, प्रवेश द्वार के माध्यम से प्रवेश द्वार के साथ।

There was also a large open area in the settlement, where public ceremonies could be held.

Other finds include large letters of the Harappan script that were carved out of white stone and perhaps inlaid in wood. This is a unique find as generally Harappan writing has been found on small objects such as seals.

बस्ती में एक बड़ा खुला क्षेत्र भी था, जहां सार्वजनिक समारोह आयोजित किए जा सकते थे । अन्य खोजों में हड़प्पा लिपि के बड़े अक्षर शामिल हैं जिन्हें सफेद पत्थर से तराशा गया था और शायद लकड़ी में जड़ा गया था। यह एक अद्वितीय खोज है क्योंकि आम तौर पर हड़प्पा लेखन जवानों जैसी छोटी वस्तुओं पर पाया गया है।

❑ धौलावीरा

- जलाशय

Water Resr.

Meluhs ⇒ Indus

Lothal:

The city of Lothal stood beside a tributary of the Sabarmati, in Gujarat, close to the Gulf of Khambat. It was situated near areas where raw materials such as semi-precious stones were easily available.

This was an important centre for making objects out of stone, shell and metal. There was also a store house in the city. Many seals and sealings (the impression of seals on clay) were found in this storehouse.

> Mesopotamia ⇒ IRAQ

लोथल:

लोथल शहर खंबात की खाड़ी के करीब गुजरात में साबरमती की एक सहायक नदी के पास खड़ा था । यह ऐसे क्षेत्रों के पास स्थित था जहां अर्ध-कीमती पत्थरों जैसे कच्चे माल आसानी से उपलब्ध थे। यह पत्थर, खोल और धातु से वस्तुओं को बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र था। शहर में एक स्टोर हाउस भी था। इस भंडार गृह में कई सील और सीलिंग (मिट्टी पर जवानों की छाप) पाए गए।

A building that was found here was probably a workshop for making beads: pieces of stone, half made beads, tools for bead making, and finished beads have all been found here.

एक इमारत है कि यहां पाया गया था शायद मोती बनाने के लिए एक कार्यशाला: पत्थर के टुकड़े, आधा बनाया मोती, मनका बनाने के लिए उपकरण, और समाप्त मोती सभी यहां पाया गया है ।

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमरउजाला

❑ लोथल

Port City बंदरगाह

Dockyard गोदीवाड़ा

Seals and sealings

Seals may have been used to stamp bags or packets containing goods that were sent from one place to another. After a bag was closed or tied, a layer of wet clay was applied on the knot, and the seal was pressed on it. The impression of the seal is known as a sealing.

The mystery of the end

— Env. decay

Around 3900 years ago we find the beginning of a major change. People stopped living in many of the cities. Writing, seals and weights were no longer used. Raw materials brought from long distances became rare. In Mohenjodaro, we find that garbage piled up on the streets, the drainage system broke down, and new, less impressive houses were built, even over the streets.

Why did all this happen? We are not sure. Some scholars suggest that the rivers dried up.

अंत का रहस्य

लगभग ३९०० साल पहले हम एक बड़े बदलाव की शुरुआत पाते हैं । कई शहरों में लोगों का रहना बंद हो गया। लेखन, जवानों और वजन अब इस्तेमाल नहीं किया गया । लंबी दूरी से लाया गया कच्चा माल दुर्लभ हो गया। मोहनजोदड़ो में, हम पाते हैं कि सड़कों पर कचरे के ढेर, जल निकासी प्रणाली टूट गई, और नए, कम प्रभावशाली घर बनाए गए, यहां तक कि सड़कों पर भी। यह सब क्यों हुआ? हमें यकीन नहीं हो रहा है । कुछ विद्वान बताते हैं कि नदियां सूख गईं।

Others suggest that there was deforestation. This could have happened because fuel was required for baking bricks, and for smelting copper ores. Besides, grazing by large herds of cattle, sheep and goat may have destroyed the green cover. In some areas there were floods. But none of these reasons can explain the end of all the cities. Flooding, or a river drying up would have had an effect in only some areas.

दूसरों का सुझाव है कि वनों की कटाई थी । ऐसा इसलिए हो सकता था क्योंकि ईंटों को पकाने के लिए और तांबे के ओरेस को गलाने के लिए ईंधन की आवश्यकता थी। इसके अलावा, मवेशियों, भेड़ और बकरी के बड़े झुंडों द्वारा चराई हरे रंग के आवरण को नष्ट कर दिया हो सकता है । कुछ इलाकों में बाढ़ आई थी। लेकिन इनमें से कोई भी कारण सभी शहरों के अंत की व्याख्या नहीं कर सकता है। बाढ़, या एक नदी सूख गया होता एक केवल कुछ क्षेत्रों में प्रभाव।

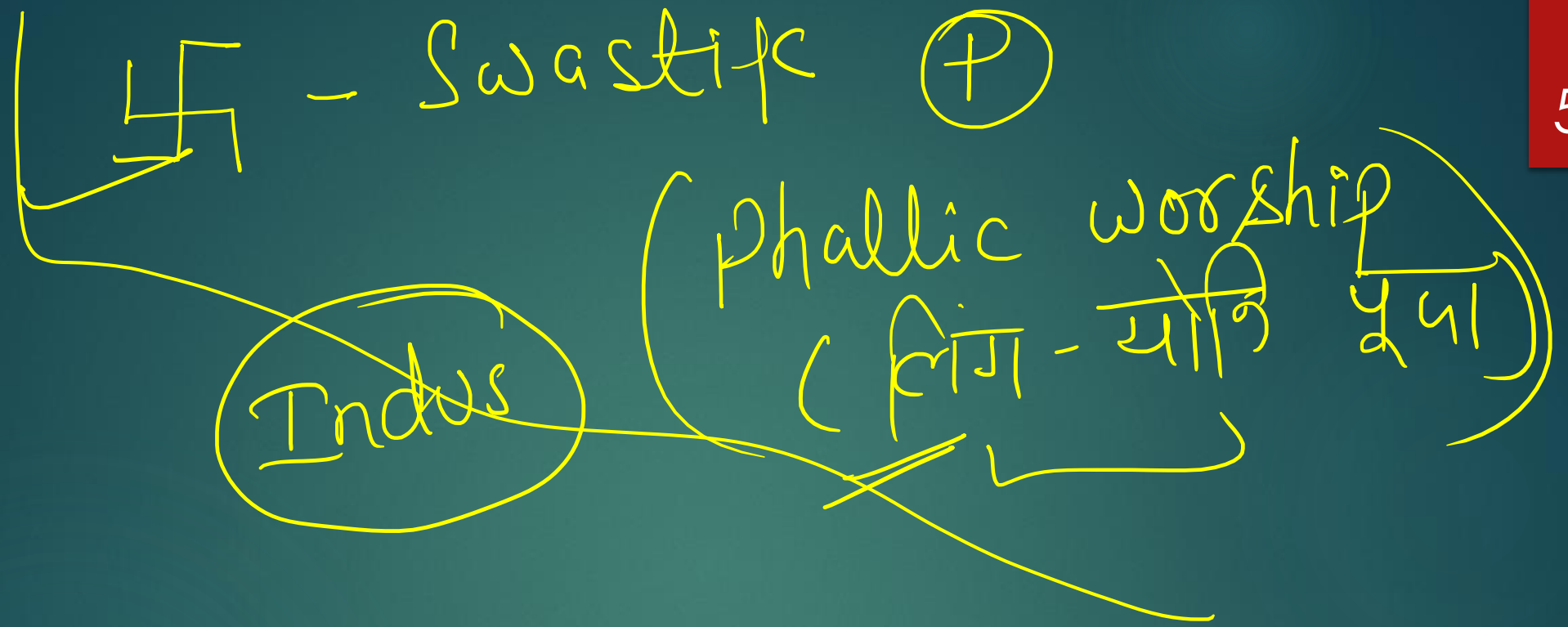
Swastik
Indus
Phallic worship
लिंग - योनि पूजा

The Vedic Civilization

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

वैदिक सभ्यता

इस सभ्यता को दो भागों में बांटा जाता है|

(i) ऋग्वैदिक काल या पूर्व वैदिक काल (1500-1000 B.C.)

(ii) उत्तर वैदिक काल (1000-600 B.C.)

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

Vedic Civilization

This civilization is divided into two parts.

(i) Rigvedic period or pre-Vedic period (1500BC-1000 B.C.)

(ii) Post Vedic period (1000-600 B.C.)

Indra

← आर्य ARYAN ??

श्रेष्ठ
Supreme

Indian

Central Asia

मध्य एशिया

मैक्स मूलर

Max muller

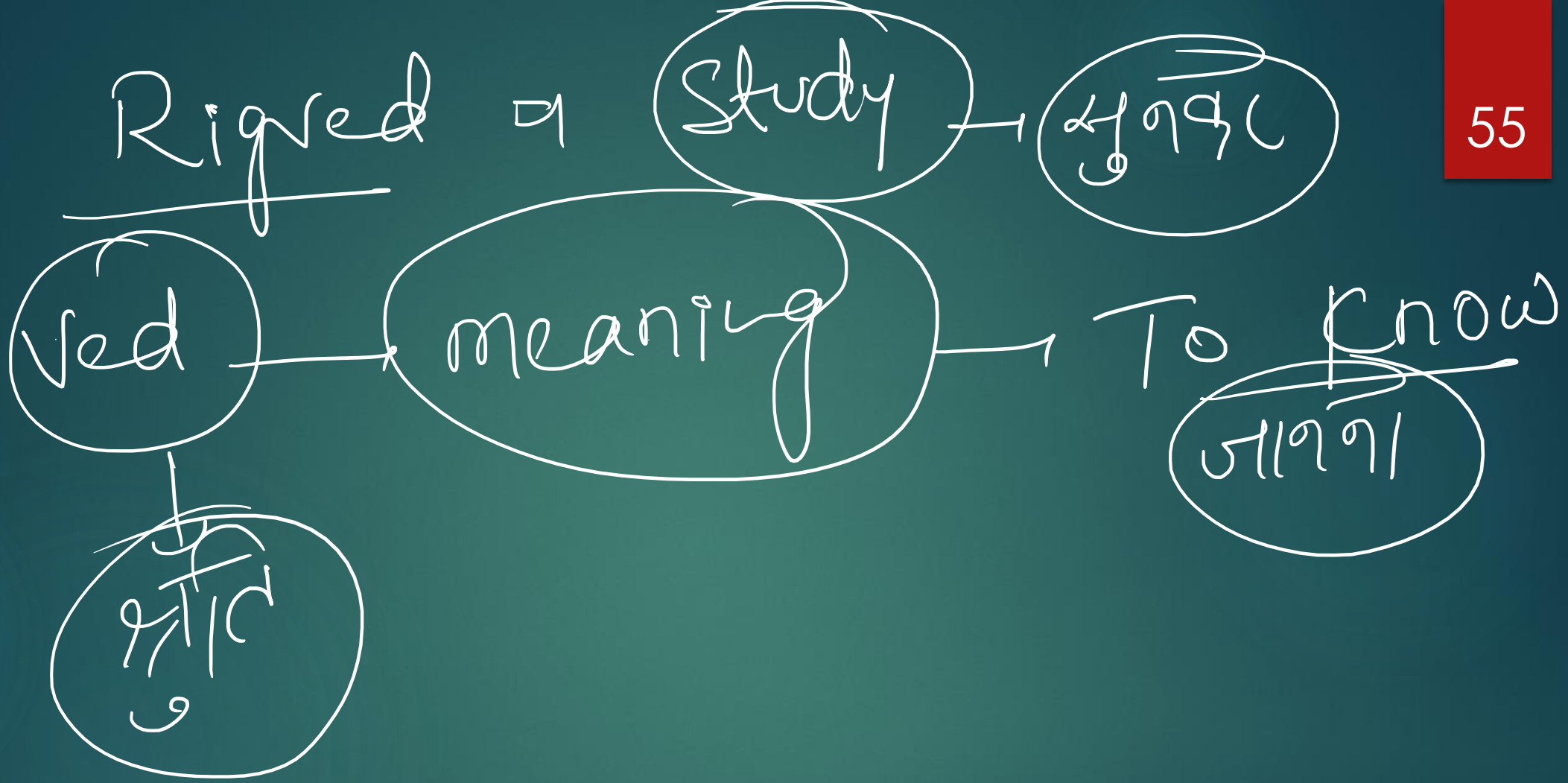

Rigved
Study
Ved
meaning
To Know
जानना
श्रुति

Rigved → Palm (P) leaves

ताड़

Birch Bark

भूर्ज

छाल

→ Language → [Vedic Sanskrit]

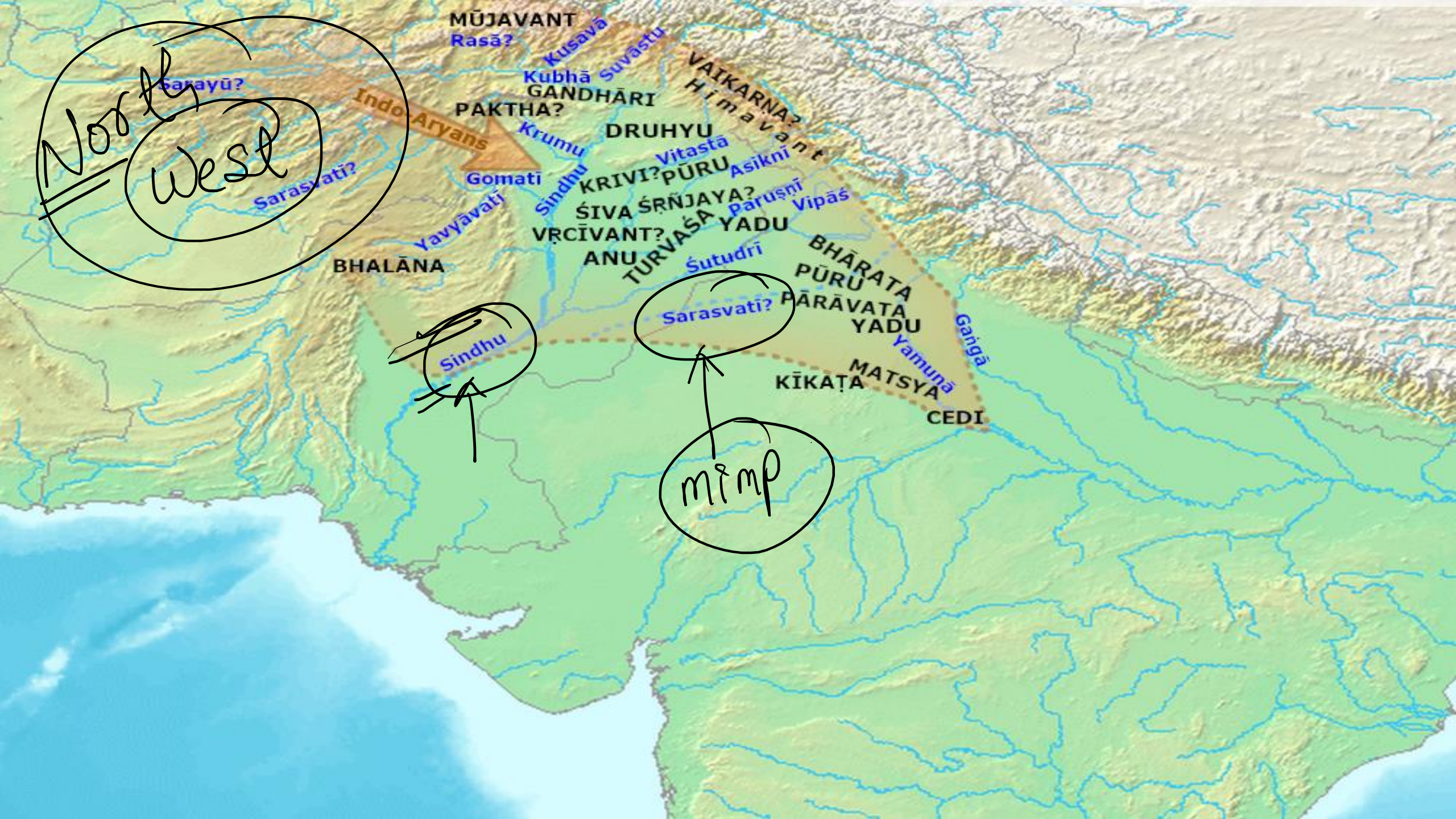

MŪJAVANT
Rasā?
Kusavā
Suvāstu
Kubhā
GANDHĀRI
Sarayū?
Indo-Aryans
PAKTHA?
VAIKARṆA?
Himavant
DRUHYU
Krumu
Vitastā
Asiknī
Gomatī
Sindhu
KRIVI?
PŪRU
Sarasvatī?
ŚIVA
ŚṚÑJAYA?
Paruṣṇī
Vipāś
Yavyāvatī
VṚCĪVANT?
YADU
ANU
TURVAŚA
BHĀRATA
Śutudrī
BHALĀNA
PŪRU
Sarasvatī?
PĀRĀVATA
YADU
Gaṅgā
Sindhu
Yamunā
MATSYA
KĪKAṬA
CEDI
North
West

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

* ऋग्वैदिक काल*

- भारत का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद है।
- ऋग्वेद को दस मंडलों में बांटा गया है |

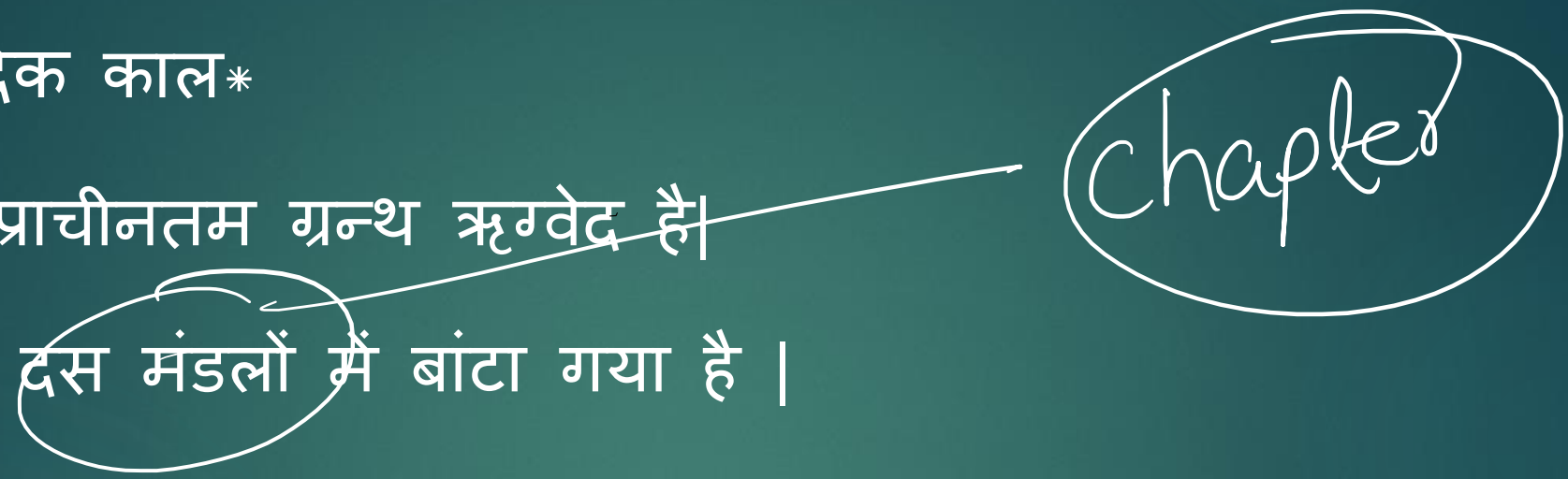

chapter

Rigvedic Period

- The oldest granth of India is rigveda.
- The Rig Veda is divided into ten divisions.

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमरउजाला

- गायत्री मन्त्र ऋग्वेद के तीसरे मंडल से लिया गया था |
- **Gayatri Mantra was taken from the third division of Rigveda.**

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

- ऋग्वेद के सबसे महत्वपूर्ण देवता इंद्र हैं|
- ऋग्वेद की सबसे महत्वपूर्ण नदी- सरस्वती
- सिन्धु नदी का वर्णन ऋग्वेद में सबसे ज्यादा बार किया गया है|
- ऋग्वेद में इंद्र शब्द का प्रयोग सबसे ज्यादा बार किया गया है |
- समाज समानता पर आधारित था |

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

- The most important deity of Rigveda is Indra.
- The most important river of Rigveda- Saraswati.
- The Indus River has been described most often in the Rig Veda.
- The word Indra has been used most often in RigVeda.
- Society was based on equality.

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

- समाज में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी|
- पहली धातु तांबा थी |
- पहला अनाज जौं था |
- इन्होने घोड़े का प्रयोग युद्धों में किया था |
- प्रमुख व्यवसाय पशुपालन था |

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

- The status of women in the society was good.
- The first metal was copper.
- The first grain was barley.
- He used the horse in wars.
- The main business was animal husbandry.

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

उत्तर वैदिक काल (1000 BC - 600 BC)

- इन्होंने लोहे का प्रयोग आरम्भ कर दिया था |
- प्रमुख व्यवसाय कृषि थी |
- समाज चार भागों में विभाजित हो गया था|
- सबसे प्रमुख देवता प्रजापति थे |
- समाज में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आरम्भ हो गयी थी |

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

Post Vedic Period

- They started using iron.
- The major occupation was agriculture.
- The society was divided into four parts.
- The most prominent deity was Prajapati.

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

1. ऋग्वेद-

Priest : होत्र(Hotra)

Subject: Prayers

2. यजुर्वेद (गद्य+पद्य- दोनों में लिखा गया है ।)

Priest : अह्वर्यु-

Subject: कर्मकांड

यजुर्वेद (गद्य+पद्य- दोनों में लिखा गया है ।)

यजुर्वेद के दो प्रकार है : 1. शुक्ल यजुर्वेद 2. कृष्ण यजुर्वेद

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

सामवेद

Priest : उदगातृ

Subject: संगीत

अथर्व वेद

Priest : ब्रह्म

Subject: काला जादू और आयुर्वेद

= पुरुष सूक्त Purush Sukt

= (Rigved → 10th मंडल)

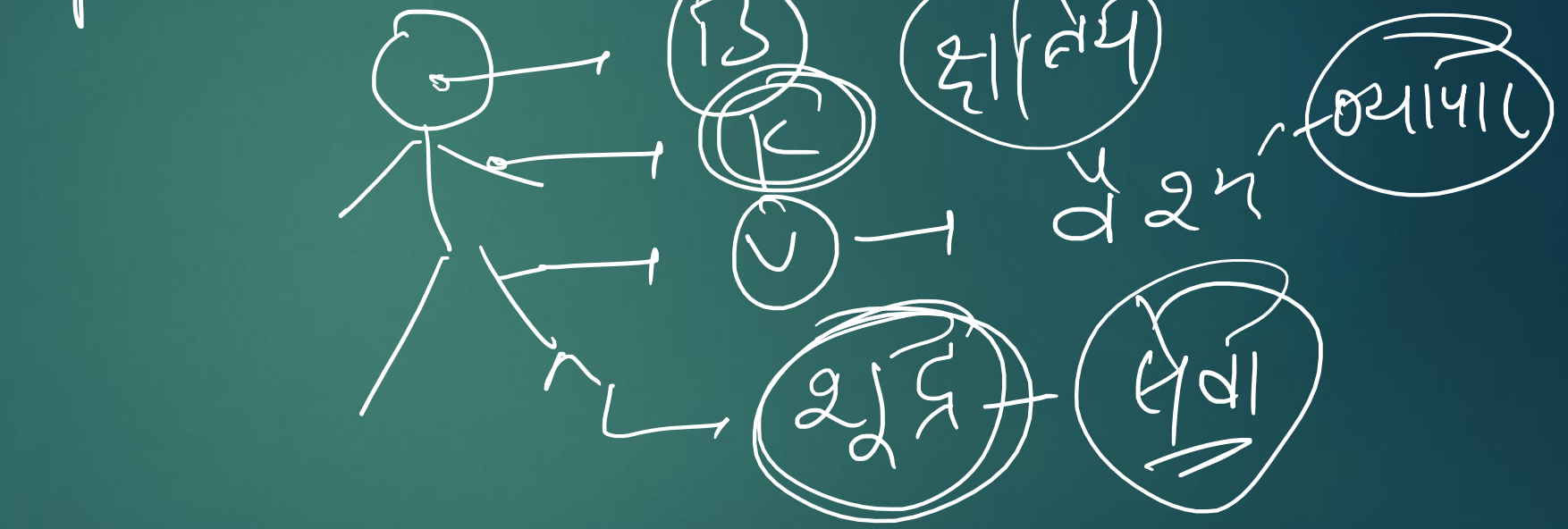

16 महाजनपदों का इतिहास

	महाजनपद	राजधानी
1.	काशी	वाराणसी
2.	कुरु	इन्द्रप्रस्थ (मेरठ तथा द०पू० हरियाणा)
3.	अंग	चंपा (भागपुर व मुंगेर)
4.	कोशल	श्रावस्ती (फैजाबाद मण्डल)
5.	मगध	राजगृह/गिरिब्रज (दक्षिणी बिहार)
6.	वज्जि	वैशाली (उत्तरी बिहार)
7.	मल्ल	कुशीनारा (देवरिया, गोरखपुर का क्षेत्र)
8.	चेदि/चेती	शुक्तिमती (आधुनिक बुंदेल खण्ड)
9.	वत्स	कौशांबी [इलाहाबाद एवं बाँदा (उ०प्र०]

10.	पांचाल उत्तरी-पांचाल दक्षिणी-पांचाल	अहिच्छत्र (बरेली, रामनगर) काम्पिल्य (फर्रूखाबाद)
11.	मत्स्य	विराटनगर [अलवर, भरतपुर (राजस्थान)]
12.	सूरसेन	मथुरा (आधुनिक ब्रजमण्डल)
13.	अश्मक	पोतन या पोटिल (आंध्र प्रदेश)
14.	अवंती	उत्तरी-उज्जयिनी, दक्षिणी-माहिष्मती
15.	गांधार	तक्षशिला [पेशावर तथा रावलपिण्डी (पाकिस्तान)]
16.	कम्बोज	राजपुर/हाटक (कश्मीर)

DN

dynasty

① हर्यक वंश
Haryank dy

② शिशुनाग
dy

③ नंद वंश
Nanda

Nanda dynasty

↓

founder → Mahapadma Nanda

महापद्मनंद

son

Dhanananda

धनानंद

चाणक्य Chanakya

→ Kautilya / Vishnugupt

→ तक्षशिला Taxila (Pak.)

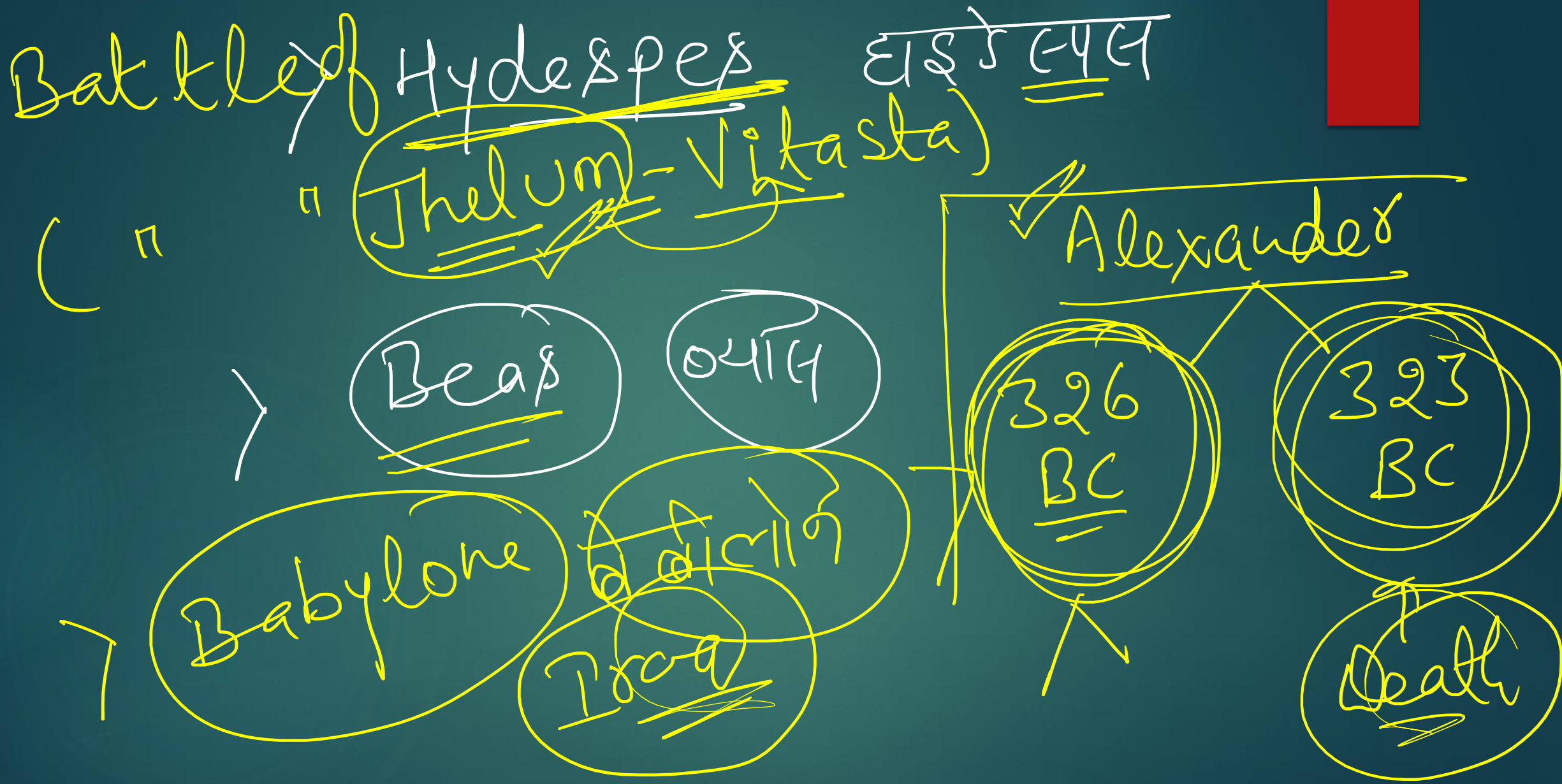

Battle of Hydespes हाइडेस्पस

(" " Jhelum - Vitasta)

> Beas વ્યાસ

> Babylone બેબીલોન

Troa

Alexander

326 BC

323 BC

Death

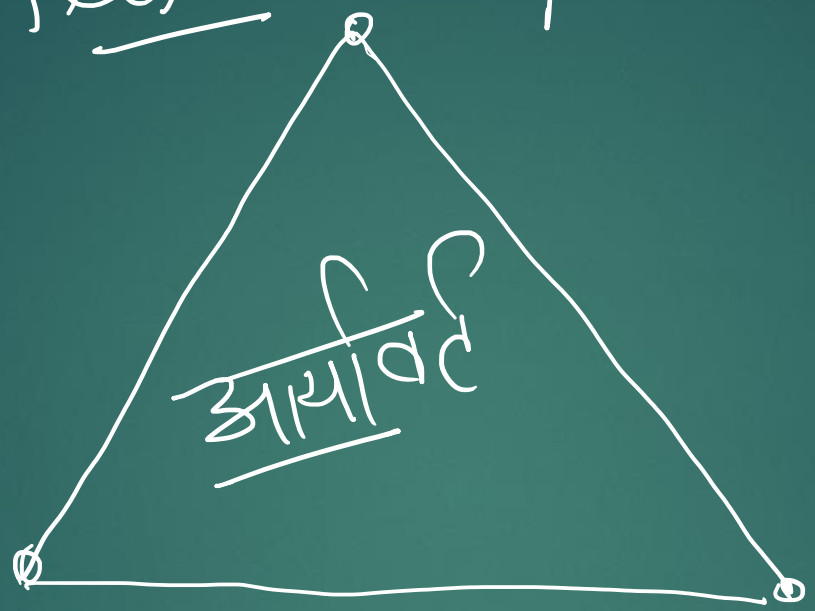

सिकंदर
Alexander / Selucas
सेल्यूकस
आर्यावर्त
chankya
चाणक्य
&
chandragupt Mauryan
Dhanande
धनानंद

JAIN RELIGION

जैन धर्म

★ जैन धर्म में मोहनजोदड़ो के पशुपति की मुहर को प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव मानते हैं।

★ दूसरे तीर्थकर अजीतनाथ की चर्चा युजुर्वेद में मिलती है।

★ 23वें तीर्थकर पार्श्वनाथ थे, काशी जो काशी नरेश अश्वसेन के पुत्र थे। ये इक्ष्वाकु के थे।

पार्श्वनाथ की पत्नी - प्रभावती

पार्श्वनाथ की माँ - वामा

महावीर के बारे में

★ जैन धर्म के 24वें तीर्थकर वर्धमान महावीर थे।

जन्म : कुण्डग्राम (वैशाली)

कब : 540 बी.सी.

पिता : सिद्धार्थ

कुल	:	ज्ञातृक
भाई	:	नदिवर्धन
माता	:	त्रिशला (लिच्छवी, राज चेतक की बहन)
पत्नी	:	यशोदा
पुत्री	:	अनोज्जा (प्रियदर्शिनी)
दामाद	:	जामिल (प्रथम शिष्य)
मृत्यु	:	पावापुरी (नालंदा)

नोटः जैन धर्म में आत्मा व पुनर्जन्म दोनों माने जाते हैं।

पांच सिद्धान्त

1.अहिंसा, 2.अमृषा, 3.अचौर्य, 4.अपरिग्रह 5.ब्रह्मचर्य (महावीर द्वारा जोड़ा गया)

त्रिरत्नः सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक आचरण

जैन धर्म

श्वेतांबर(वस्त्र धारण करते हैं)

प्रमुखः स्थूलभद्र

दिगंबर (दिशाओं को ही वस्त्र मानतें हैं)

प्रमुखः भद्रबाहू

Bajpai Sir

★ महावीर के बाद सुधर्मन अध्यक्ष बना था।

★ महावीर के जृम्भिक ग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के किनारे साल के वृक्ष के नीचे साल के वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था।

- Jains consider Pashupati of Mohanjodaro as 1st Tirthankar, Rishabhdev.
- 2nd Tirthankar, Ajitnath is mentioned in Yajurveda.
- 23rd Tirthankar, Parsvanath was son of Asvasen,King of Kashi. Parsvanath belonged to ICCHVAKU dynasty. Mother of Parsvanath was Vama & his wife was Prabhavati.

SIR

ABOUT MAHAVIR

- He was 24th Tirthankar of Jain religion.

Birth year	540 B.C.
Birth Place	Kund Gram (Vaishali)
Father	Siddhartha
Dynasty	Gyatraka
Brother	Nandivardhan
Mother	Trishala (Sister of Licchavi King Chetak)
Wife	Yashoda
Daughter	Anojja Priyadarshini
Son-in-law	Jamil (1st Pupil of Mahavir)
Death	Pava-Puri (Nalanda)

SUJEET BAJPAI

- Mahavir got enlightenment near Rijupalik river in Jambhrik Village.

FIVE VOWS OF JAIN RELIGION:

1. Non- violence.
2. Truth.
3. Non- stealing.
4. Non- possession.
5. Chastity (Added by Mahavir).

THREE JEWELS OF JAIN RELIGION:

1. Right Faith
2. Right Knowledge
3. Right Conduct

T BAJPAI SIR

JAIN RELIGION IS DIVIDED IN TWO PARTS:

1.Shvetambar :

A)Chief Priest :Sthoolbhadra.

B)They wear white clothes.

2.Digambar :

A) Chief Priest: Bhadrabahu

B) They consider directions as their clothes.

SUJEET

BAUDDHA RELIGION

बौद्ध धर्म

प्रवर्तक	:	गौतम बुद्ध (वंश शाक्य)
बुद्ध के पिता	:	शुद्धोधन (शाक्य कुल, कपिलवस्तु के शासक)
बुद्ध का वास्तविक नाम	:	सिद्धार्थ
जन्म स्थान	:	लुम्बिनी (वर्तमान नेपाल)
मृत्यु	:	483बी.सी.कुशीनगर (वर्तमान में दवरिया)
माता	:	महामाया(जन्म के 7वें दिन मृत्यु,कोलिय वंश की थी)
पालनकर्ता	:	मौसी प्रजापति गौतमी(संघ में प्रवेश करने वाली प्रथम महिला)
पत्नी	:	यशोधरा, अन्य नाम – गोपा, बिम्बा आदि
पुत्र	:	राहुल
गुरू	:	आलारकलाम
योग गुरू	:	रूद्रकराकपुप्त
सारथी	:	छन्दक, चन्ना आदि

घोड़ा : कन्थक

ज्ञानप्राप्ति : बोधगया में (नदी – निरंजना (फल्गू))

वृक्ष के नीचे : पीपल

महाभिनिष्क्रमण : ग्रह त्याग को कहते हैं।

धर्मचक्र प्रवर्तन : प्रथम उपदेश को कहते हैं। स्थानः सारनाथ

महापरिनिर्वाण : मृत्यु को कहते हैं।

शिष्य : उपालि एवं आनंद

कुशीनगर में चुंद सुनार के यहां भोजन खाने से मृत्यु।

बौद्ध धर्म

हीनयान	महायान	वज्रयान
धर्म को मूलरूप	बुद्ध को अवतार	बुद्ध को अलौकिक
से मानते हैं	मानते हैं	सिद्धियों वाला

मानते हैं।

Sir

★ ''प्रतीत्य समुत्पाद'' : बुद्ध की शिक्षाओं का सार है।

बुद्ध के जीवन की घटनाएं	:	**संबंधित चिन्ह**
जन्म	:	कमल व सांड
गृहत्याग	:	घोड़ा
ज्ञान	:	पीपल
निर्वाण	:	पदचिन्ह
मृत्यु	:	स्तूप
त्रिरत्न	:	बुद्ध, धर्म, संघ

★ पुनर्जन्म की मान्यता है जबकि आत्मा की नहीं है।

Sujeet Bajpai

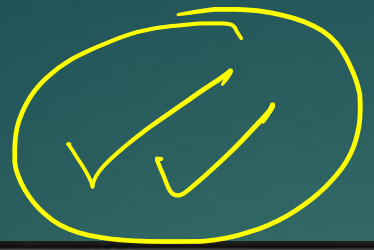

Buddhist Council	Patron	Venue	Chairman
First	Ajatashatru	Rajgriha	Mahakashyapa
Second	Kalashoka	Vaishali	Sabbakami
Third	Ashoka	Patliputra	Mogaliputra
Fourth	Kanishka	Kundalban (Kashmir)	Vasumitra

Founder	Gautam Buddha
Dynasty	Shakya
Father	Shuddhodhana (King of Kapilvastu)
Real Name of Buddha	Siddhartha
Birth Place	Lumbini (Nepal)
Death	Kushinagar (Devariya) in 483 B.C.
Mother	Mahamaya of Koliya Dynasty (She Died on 7th day of His Birth)
Brought up by	Aunt Prajapati Gautmi She First Women to get permission to enter in Sangha
Wife	Yashodhara (Other Names- Gopa, Bimba)
Son	Rahul
Yog Teacher	Rudrak Ramputta
Charioteer	Chandak, Channa etc.

SET BAJPAI SIR

Charioteer	Chandak, Channa etc.
Horse	Kanthak
Place of Enlightenment	Bodhgaya
River	Niranjana(Falgu)
Tree	Pipal
Maha Bhinish Kraman	Leaving of Home
Dharmachakra	1st Surmon (Place: Sarnath)

Pravrton	
Mahaparinirvan	Death
Pupil	Upali and Ananda

BAUDDHA RELIGION IS DIVIDED IN THREE PARTS:

1ST- Heenyan = Oldes form of religion.

2ND- Mahayam = Buddha considered as a Carnation.

3RD- Vajrayan = Buddha considered man of magic. Tara is related with Vajrayan.

** PratityaSamutpad- Gist of Buddha's teachings.

AJPAI SIR

** PratityaSamutpad- Gist of Buddha's teachings.

LIFE EVENTS OF BUDDHA	SYMBOL
Birth	Lotus and Ox
Leaving of Home	Horse
Enlightenment	Pipal
Nirvana	Foot Step
Death	Stupa
Three Jewels	Buddha, Dhamma, Sangh

** Rebirth is considered in Bauddha religion but Soul is not considered in Bauddha religion.

SUJEET BA